International Journal of Applied Research 2018; 4(10): 48-49

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(10): 48-49
www.allresearchjournal.com
Received: 15-08-2018
Accepted: 19-09-2018

डॉ. प्रज्ञा ओझा
विषय वस्तु विषेषज्ञ गृहविज्ञान,
कृषि विज्ञान केन्द्र, बाँदा,
उत्तर प्रदेश, भारत

डॉ. अवधेश कुमार
तकनीकी सहायक, कृषि विभाग
उत्तर प्रदेश सरकार, उत्तर प्रदेश,
भारत

Correspondence
डॉ. प्रज्ञा ओझा
विषय वस्तु विषेषज्ञ गृहविज्ञान,
कृषि विज्ञान केन्द्र, बाँदा,
उत्तर प्रदेश, भारत

कार्य को प्रभावित करने वाले कारक

डॉ. प्रज्ञा ओझा, डॉ. अवधेश कुमार

प्रस्तावना

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण योगदान है क्योकि भारत की 70 प्रतिशत जनसंख्या कषि पर ही निर्भर है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार 56.7 प्रतिशत मानव संसाधन कृषि व उससे जुड़ी हुई गतिविधियों में संलग्न है जो कि यह दर्शाता है कि रोजगार प्रदान करने में कृषि क्षेत्र महत्वपूर्ण भूमिका रखता है। वर्ष 2011 की जनगणना के आकड़ो के अनुसार वर्ष 2001 से कृषि क्षेत्र में 8 प्रतिशत कृषक महिलाओं की वृद्धि भी हुई है।

आधुनिक भौतिक युग में पुरूषो के साथ महिलायें भी जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपना योगदान दे रही है। ग्रामीण कृषक महिलाये गृहकार्यों के साथ पुरूष कृषकों के समान कृषि में भी विशेष भूमिका निभा रही है। आधुनिक संख्यिकी के अनुसार, गृहकार्यों तथा कृषि के कार्यों में लगभग 65 प्रतिशत महिलाओं का ही योगदान है। भारतीय कृषक महिलायें पुरूषों की अपेक्षा कृषि के विभिन्न कार्यों को पुरूषों की अपेक्षा ज्यादा देत तक करती हैं। परन्तु पुरूष कृषकों की अपेक्षा उनकों कम मूल्य प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त कृषि कर्यों में महत्वपूर्ण योगदान के बाद भी कृषक महिलायें आज भी समाज में उन्नत किसान के रूप में आगे नहीं बढ़ पायी है।

कृषक महिलाओं द्वारा विभिन्न कृषि गतिविधियाँ जैसे कि फसल उत्पादन, संरक्षण व प्रसंस्करण इत्यादि कार्य प्रमुख करते हैं। कृषक महिलाये खाद्य तन्त्र में बीजों का चुनाव, बुवाई, खाद डालने का, फसल सुखाने का, पैकिंग का व भण्डारण के कार्य के साथ परिवार के विभिन्न सदस्यों के लिए भोजन बनाने का कार्य करने तक विशेष भूमिका रखती है। इसके अतिरिक्त कृषक महिलायें प्रक्षेत्र प्रबन्धन में भी मुख्य निर्णयकर्ता का भी कार्य करती है। यह एक विशेष कारक है, जिसकी वजह से अधिकतर महिलायें शरीर थकान का अनुभव करती है। शारीरिक थकान का एक अन्य कारण, कार्यों के सम्पादन के समय अत्यधिक ऊर्जा का व्यय व कठोर परिश्रम है। क्रमशः कठोर परिश्रम वाले कार्यों को करने से उनको स्वास्थ्य सम्बन्धी विभिन्न परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

कृषि कार्यों के सम्पादन के दौरान होने वाली स्वास्थ्य समस्यायें– व्यवसायिक स्वास्थ कृषि क्षेत्र में एक नया विचार है व्यवसायिक स्वास्थ्य से तात्पर्य यह है कि विभिन्न कार्यों को करते समय कार्यकर्ता को विभिन्न प्रकार की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक समस्याओं से बचाने के साथ उसकी कार्यप्रणाली, कार्यवातावरण व कार्य क्षमता में सकारात्मक रूप से परिवर्तन किया जा सके। जिससे वह मानसिक व शरीरिक रूप से स्वस्थ्य रह सके। व्यवसायिक स्वास्थ सेवायें मुख्य रूप से कार्य व कार्यवातारण को ध्यान रखती है। कृषि कार्यों के समपादन के दौरान कृषक महिलाये विभिन्न प्रकार की समस्याओं से जूझती है जैसे कि कार्य करने के लिए पारम्परिक कार्य प्रणालियों का चुनाव, उपयुक्त कार्य संस्थाओं की कमी, कुपोषण, आय में कमी, तकनीकी पिछड़ापन व विपरीत पारिस्थकीय स्थितियाँ इत्यादि जिससे कृषक महिलाओं की अपनी शारीरिक क्षमता के विपरीत अत्यधिक श्रम का व्यय करना पड़ता है। ऐसा देखा जाता है कि हमारी ग्रामीण कृषक महिलाये सरकार द्वारा दी गई नयी तकनीकियों व संसाधनों का पूर्ण रूप से प्रयोग नहीं कर पाती है क्योंकि वह तकनीकी व संसाधन कृषक पुरूषों को ध्यान में रखते हुए निर्मित किये जाते है। भारतीय कृषि में तकनीकीकरण हेतु विभिन्न रूपान्तरित श्रम कम करने वाले संसाधनों व कृषि यंत्रों का निर्माण महिलाओं के लिये विभिन्न राज्यों में किया जा चुका है परन्तु उचित प्रसार प्रणाली के अभाव में महिलाये उनके बारे में अनिभिज्ञ है।

शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारकः– शारीरिक स्वास्थ्य समस्याओं के अन्तर्गत मुख्य रूप से माँसपेशीय विकार व विकृतियाँ आती है जिसका मुख्य रूप से निम्न कोटि का कार्य

वातावरण होता है। कृषक महिलाओं के शारीरिक स्वास्थ्य को नकारात्मक रूप से प्रभावित करने वाले कारण निम्नवत है।

1. **अत्यधिक कार्य समयः** मनुष्य का स्वास्थ्य व कार्य क्षमता विशेष तौर पर कार्य के कुल समय पर निर्भर होती है जब कार्यकर्ता अपनी क्षमता व प्रस्तावित समय से अधिक समय कार्य में लगाता है तब उनकी कार्य क्षमता कम हो जाती है उदाहरण के लिये कृषि कर्यों के सम्पादन हेतु कार्यकर्ताओं के लिये प्रस्तावित समयावधि 8–9 घंटे है और यदि उसके विपरीत कृषिक महिला व पुरूष 12–15 घंटे कृषि कार्यों में लगाते है तब उनकी कार्य क्षमता तीव्र गति से कम हो जाती है।
2. **कार्य गतिविधियों की पुनरावृत्तिः** जब कार्य गतिविधियों की पुनरावृत्ति आवश्यकता से अधिक बढ जाती है तब कृषकों में विभिन्न समस्यायें कई बार हो जाती है। इसके अतिरिक्त कार्य गतिविधियों की अधिकता से कार्यकर्ता में उदासीनता व कार्य रूचि में कमी की समस्या भी आ जाती है।
3. **कार्य की अधिकताः** अधिक धन कमाने की लालसा में भारतीय कृषक प्रस्तावित कार्य के अलावा भी कार्यभार ग्रहण करने लगते है जिसको करने के लिए अत्यधिक श्रम व समय देना पड़ता है जो उनके स्वास्थ्य के लिए भी उचित नही रहता है। कार्य की अधिकता के कारण कृषकों को तंत्रिका तत्र सम्बन्धी समस्यायें, थकान, दैनिकचर्या में बाधा इत्यादि जैसी समस्याओं को झेलना पड़ता है।
4. **अनुपयोगी कार्य परिस्थितियाँः** इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की भौतिक कार्य परिस्थियाँ आती है जिससे कि कार्यकर्ता के व्यवहार में नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। विपरीत कार्य परिस्थितियों में कार्य करने के कारण कार्यकर्ता को शारीरिक दर्द व थकान का अनुभव होता है।
5. **परम्परिक कृषि यंत्रः** पारम्परिक कृषि यंत्रों व औजारों के साथ कार्यकर्ता को अधिक शारीरिक शक्ति का व्यय करना पड़ता है क्योंकि पारम्परिक कृषि यंत्र कार्यकर्ता की शारीरिक बनावट के प्रतिकूल रहते हैं। इसके अतिरिक्त पारम्परिक कृषि यंत्र आधुनिक तकनीकियों के अनुसार नहीं बने होते है, जिससे उनको चलाने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। परम्परिक कृषि यंत्रों जैसे कि फावड़ा, हसिया, कुल्हाड़ी इत्यादि से कार्य करते हुए कार्यकर्ता को गम्भीर चोट लगने का भी खतरा बना रहता है।
6. **अस्वच्छ वातावरणः** अस्वच्छ वातावरण में कार्य करने के कारण भारतीय कृषकों को विभिन्न प्रकार के रसायनों, धूल, धुआँ अत्यधिक तापमान नमी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ताा है जिससे कि भारतीय कृषकों को कैंसर, श्वसनतंत्र सम्बन्धी रोग, यकृत सम्बन्धी रोग, तंत्रिका तंत्र सम्बन्धी रोग व चर्म रोग जैसी समस्या आ जाती है।

सन्दर्भ

1. डे, सीमा., श्रीवास्तव, नीलिमा. एवं झा, बी. के. (2009). कृषि में महिलाओ की भूमिका, समस्या एवं निदान. प्रसार शिक्षा निदेशालय, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, राँची, जनवरी-दिसम्बर 2009